शैलेन्द्र

इंद्रजीत सिंह

साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35,
फीरोजशाह मार्ग, नयी दिल्ली-01 मूल्य-100 ₹

किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, दिल का हाल सुने दिलवाला, दिल अपना और प्रीत पराई, प्यार हुआ इकरार हुआ, मेरा जूता है जापानी, भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना, कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन, जैसे लोकप्रिय फ़िल्मी गीतों के रचयिता शैलेन्द्र के व्यक्तित्व-कृतित्व को दर्शाती यह पुस्तक साहित्य अकादमी के भारतीय साहित्य के निर्माता शृंखला की अगली कड़ी है. जिस तरह प्रेमचंद कहानी लिखते-लिखते कहानी का पर्याय बन गये उसी तरह शैलेन्द्र गीत रचते-रचते गीतों के प्रेमचंद बन गये. खेद की बात है कि हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने वाले आलोचकों ने शैलेन्द्र को लम्बे समय तक एक कवि के रूप में मान्यता नहीं दी. शैलेन्द्र के फिल्मी गीतों का जादू भारत के साथ-साथ सोवियत संघ, चीन और अरब आदि देशों के श्रोताओं के सिर चढ़कर बोला था.